

Class - B.A. Part - I

Sub - Hindi (Hon) Paper - I

Written by Ramesh Kumar
R.B.G.R College Mahavayukam

(1) आदिकालीन हिन्दी साहित्य की
धार्मिक स्थिति का सुझाव देते हैं,
उत्तर 9 इसा की छठी शताब्दी तक
देश का धार्मिक वातावरण शांत
था। विभिन्न धार्मिक समुदायों
में परस्पर मेलजोल बढ़ने लगा
था। वैदिक यज्ञ, मूर्तिपूजा, जैन
सर्व, बौद्ध उपासन - पद्धतियाँ एक
साथ चल रही थी। किंतु
सातवीं शताब्दी के साथ देश
की धार्मिक परिस्थितियों में परि-
वर्तन होने लगा। इस समय आध-
वार और नायवार संत दक्षिण
भारत से उत्तर भारत की ओर
एक धार्मिक आंदोलन लाए। 12
64 ई. में जब हूवेनसांग ने
दक्षिण भारत की यात्रा की तो
वहाँ बौद्ध धर्म के पतन की
सबूत पाकर वह बहुत दुःखी
हुआ था। उत्तर भारत में भी
इस समय वह प्रभाव आ रहा
था। वैष्णव मत इस समय अधिक
प्रचलित नहीं था। अतः जनता
में था तो जैन मत सम्मान पा-
रहा था, था तो शैव मत।
परिणाम यह हुआ कि शैव मत
और जैन मत आगे बढ़ने लगे।
होने में परस्पर टकराने लगे।
आठवीं शताब्दी तक वैष्णव

आंदोलन तीव्र होने लगा था और
शैव आंदोलन ने भी नया रूप
ले लिया था। फलतः जैन मत
के प्रचारकों की शक्ति घटने
लगी थी। राजपूत अधिपतियों
मतों पर विश्वास नहीं करते थे।
इस पर शैव मत का प्रभाव
अधिक था। मध्य देश के गार्ह-
पत्य राजा स्मार्त थे तथा मालवा
के राजा वैदिक धर्म में विश्वास
करते थे। गंगा और नर्मदा के
अंतराल में कलचुरि वंश शैव
मत के प्रचार में लगा हुआ
था।

इस ईश्वरी प्रसाद के विचार
से इस समय राजपूत शौर्य के
उदय के कारण ब्राह्मण धर्म की
विजयपताका सर्वत्र फहरा रही थी।
किंतु साथ ही यह बात भी सत्य
है कि बौद्ध धर्म भी प्रखर
बदल-बदल कर अपनी जड़ गहरी
करने के लिए सर्वत्र प्रयत्नशील
था। इसकी महायान शाखा की
के तंत्र-मंत्र जादू-टोने ध्यान-धरणा
आदि निम्न स्तर के हृदयों को
प्राप्ति कर रहे थे। जनता
हिन्दू साधुओं की जितनी प्रशंसा
करती थी उतनी ही प्रशंसा
बौद्ध साधुओं की भी थी। इनके
प्रभाव से मनज्यों में आत्मविश्वास
की कमी होती जा रही थी।
शैव साधकों का बढ़ना
इस दिशा में और साहसिक सिद्धि।

हूँ। वे जनता को चौदसी लाख
योनियों में भटकने का मयू दिखा-
कर निरुत्साहित कर रहे थे।
धार्मिक स्थलों की दुर्दशा हो
चली थी।

देशव्यापी धार्मिक अशांति के
इस काल में एक बाहरी धर्म
इस्लाम का प्रवेश भी कम महत्व
नहीं रखता है, अशिक्षित जनता
के सामने अनेक धार्मिक राहें
खनती जा रही थी, किंतु राह
दिखाने वाले लोग इमानदार
नहीं थे। बौद्ध संन्यासी योसिकु-
यमत्कारों का प्रभाव दिखा रहे
थे। वैदिक एवं पौराणिक मनों
के समुच्चय खंडन-मंडन की
झूलझुलैया में पड़े हुए थे।
बुद्ध जैन धर्म पौराणिक आख्यानों
को नये बौर में गढ़ कर जनता
की आस्थाओं पर नया प्रभाव
जमा रहा था। वैष्णवों की
धार्मिक कथाएँ जैन कथाएँ
खनती जा रही थी। इस प्रकार
नास्तिकता - आस्तिकता का अवरोध
आंदोलन जनता में भ्रान्त वातावरण
बन गया था। बना रही थी।
वैष्णवों के राम और कृष्ण जिन्होंने
पौरुष में विश्वास करके युद्ध
को भी धर्म का अंग सिद्ध किया
था, जैन धर्म की दीक्षा लेते
हुए दिखाए जाने लगे थे।
यूनियों ने इसी मानसिक स्थिति
के अनुसार साहित्य लिखा।